International Journal of Multidisciplinary Education and Research
ISSN: 2455-4588; Impact Factor: RJIF 5.12
www.multieducationjournal.com
Volume 1; Issue 3; May 2016; Page No. 63-65

माध्यमिक शिक्षा स्तर पर कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण अधिगम क्षमता का अध्ययन (सतना जिले के संन्दर्भ में)

[1] डॉ0 छाया श्रीवास्तव एवं [2] डॉ0 जय सिंह

[1] प्राचार्य, श्रीरामा कृष्णा कालेज ऑफ ऐजुकेशन सतना (म.प्र.)
[2] प्राध्यापक शिक्षा, शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

सारांश
मध्यप्रदेश राज्य में शिक्षकों की नियुक्ति के लिए शासन द्वारा लिखित परीक्षा का आयोजन किया जाता है। परीक्षा कें उपरान्त परीक्षाफल कें आधार पर अभ्यर्थी की नियुक्ति शासकीय विद्यालयों में शिक्षक के पद पर की जाती है। इन परीक्षाओं को आयोजित करने में मध्यप्रदेश शासन का मुख्य उद्देश्य शिक्षकों की शिक्षण अधिगम क्षमता को जानने का हैं, क्योकि यदि शिक्षकों में शिक्षण अधिगम क्षमता में कमी होगी तो वे देश का भविष्य अर्थात् बालकों को कैसे तैयार कर सकेगें। प्रस्तुत शोध माध्यमिक शिक्षा स्तर पर कार्यरत् शिक्षकों की शिक्षण अधिगम क्षमता शासकीय मापदंड कें अनुरूप है या नहीं का अध्ययन करना है। शोध के उपरान्त यह निष्कर्ष निकलता है कि 65.83 प्रतिशत शिक्षक शासकीय मापदंड के अनुरूप है।

शब्द कुंजीः माध्यमिक शिक्षा स्तर, शिक्षक, अधिगम क्षमता, सतना जिला

1 प्रस्तावना
शिक्षा शब्द को लेकर आज भी एकमतता नही है। स्कूल में पठन–पाठन को शिक्षा का वास्तविक रूप माना जाता है, वास्तव में ऐसा नहीं है। महात्मा गॉधी ने शिक्षा को सर्वांगीण विकास (शरीर, आत्मा तथा मस्तिष्क के विकास) की प्रक्रिया माना है। प्राचीनकाल में भारतीय मनीषियों ने 'सा विद्या या विमुक्तये' कहकर शिक्षा का लक्ष्य निर्धारित किया था। इसका महत्व इतना अधिक था कि इसे मनुष्य का तीसरा नेत्र कहा गया–

'ज्ञानं मनुजस्य तृतीयं नेंत्रं'

शिक्षा शब्द संस्कृत की 'शिक्ष' धातु से बना है इसका अर्थ है सीखना। सीखने की प्रक्रिया शिक्षक, छात्र तथा पाठ्यक्रम द्वारा सम्पादित होती है। परन्तु प्राचीन काल से वर्तमान काल तक सीखने की इस प्रक्रिया में शिक्षक अर्थात् गुरू का स्थान सर्वोपरि है। आचार्य को गुरू या श्रेष्ठ माना गया है गुरू शब्द का अर्थ ही श्रेष्ठ है, जो सर्वश्रेष्ठ है वही गुरू है। भारतीय मनीषियों ने सदैव ही शिक्षक को उच्च स्थान दिया है। भारतीय साहित्य में गुरू की प्रशंसा में वर्णन मिलता है व्यास, वसिष्ठ, विश्वामित्र, सांदीपनि, द्रोणाचार्य, शुक्राचार्य और कृपाचार्य की एक गौरवशाली परम्परा है। गुरू समाज के मार्गदर्शन है गुरू के सम्बन्ध में कहा जाता है। ''गुरू बिन कौन बताएँ बाट'' अर्थात् गुरू के बिना कौन रास्ता बतलाएँ। अध्यापन का व्यवसाय विद्यादान का व्यवसाय है बिद्या एक श्रेष्ठ दान है। विद्या देने से बढ़ती है। विद्यादान से अध्यापन का विकास होता है और उसमें दैनापन तथा निखार आता है। किसी भी राष्ट्र की शिक्षा को वहाँ की सांस्कृति के परिपेक्ष्य में ही समझा जा सकता है। शिक्षा की प्रक्रिया में शिक्षक एक महत्वपूर्ण नहीं होता है तथा वही हमारी संस्कृति के सुविचार का संरक्षक होता है। अध्यापक ही विद्यालय तथा शिक्षण प्रक्रिया की वास्तविक रूप से गत्यात्मक या गतिशील शक्ति है। डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णनन ने कहा है कि – ''समाज में अध्यापक का स्थान बहुत ही महत्वपूर्ण है। वह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को बौद्धिक एवं तकनीकी कुशलताओं का हस्तान्तरण करने का केन्द्र है और सभ्यता कें प्रकाश को प्रज्वलित रखनें में सहायता देता है। एक अध्यापक की कल्पना एंव आदर्श चरित्र एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व की कल्पना है। अध्यापक को अन्धकार रूपी अज्ञान को गिराने वाला तथा ज्ञान रूपी प्रकाश दिखाकर मानवता के पथ को आलोकित करने वाला कहा गया है। 'गुरू' शब्द अध्यापक के 'गुरूवर दायित्वों' का आभास कराता है। इस प्रकार अध्यापन की बौद्धिक योग्यता कें साथ–साथ नैतिक कर्तव्य और निष्ठा ही एक अध्यापक को गौरवान्वित कर सकती है।''

यह बात अपनी जगह सही है कि विद्यालय – भवन, पाठ्यक्रम, पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाएँ, निर्देशन कार्यक्रम, पाठ्यपुस्तकें आदि का शैक्षिक कार्यक्रमों में अत्यंन्त महत्वपूर्ण स्थान है, पाठ्य पुस्तकें आदि का शैक्षिक कार्यक्रमों में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है, लेकिन जब तक इनमें अच्छे अध्यापकों द्वारा गति प्रदान नही की जाएगी तब तक यह सभी निरर्थक है। अतः अध्यापक ही वह शक्ति है जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से आने वाली संततियों पर अपना प्रभाव डालती हैं। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि राष्ट्र एवं समाज की प्रगति उत्पन्न एवं कुशल अध्यापकों पर निर्भर करती है। माध्यमिक शिक्षा आयोग कें अनुसार – ''अपेक्षित शिक्षा कें पुर्ननिर्माण में सर्वाधिक महत्वपूर्ण तत्व अध्यापक उसके व्यक्तित्व गुण, शैक्षिक योग्यताएँ, व्यावसायिक प्रशिक्षण और उसकी स्थिति, जो वह विद्यालय तथा समाज में प्राप्त करता है, ही है। विद्यालय की प्रतिष्ठा तथा समाज कें जीवन पर उसका प्रभाव निःसन्देह रूप से उन अध्यापकों पर निर्भर करता है जो उस विद्यालय में कार्यरत होतें है।''

व्यक्ति की निष्पति, ज्ञान एवं गुण इत्यादि का पता लगाने में अत्यन्त प्राचीन काल से ही किसी न किसी प्रकार कें परीक्षणों एवं मापन विधियों का प्रयोग होता रहा है। प्राचीन काल की संस्कृतियों में इस प्रकार के अनेक प्रमाण मिले हैं। परन्तु आधुनिक काल में जिस प्रकार विभिन्न क्षेत्रों में परीक्षण प्रयुक्त होते हैं यह एक नये प्रकार की प्रगति है।

2 शोध की आवश्यकता एवं महत्व
प्रस्तुत शोध अध्ययन की विषय वस्तु माध्यमिक शिक्षा स्तर पर कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण एवं उनकी अधिगम क्षमता कें प्रथम उद्देश्य की पूर्ति पर लक्षित एवं सतना जिले कें माध्यमिक शिक्षा स्तर पर कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण अधिगम क्षमता शासकीय मापदण्ड कें अनुरूप है या नहीं। क्योंकि यदि हम शिक्षकों की

शिक्षण अधिगम क्षमता शासकीय मापदण्ड कें अनुरूप नहीं पाते हैं, तो माध्यमिक शिक्षा स्तर के शिक्षकों के लिए शिक्षण अधिगम क्षमता में वृद्धि हेतु आयोजित सेवाकालीन प्रशिक्षणों की गुणवत्ता का मूल्यांकन किया जा सकेगा साथ ही इन सेवाकालीन प्रशिक्षणों के सुचारू रूप से संचालन में आने वाली कठिनाईयों को या समस्याओं की जानकारी प्राप्त होगी तथा उनकें समाधानों पर विचार किया जाएगा।

3 शोध परिकल्पना

सतना जिले कें माध्यमिक शिक्षा स्तर पर कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण अधिगम क्षमता शासकीय मापदण्ड कें अनुरूप है।

4 उद्देश्य

शोधार्थी का मुख्य उद्देश्य सतना जिले कें माध्यमिक स्तर पर कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण अधिगम क्षमता शासकीय मापदण्ड कें अनुरूप है, का अध्ययन करना है, क्योंकि शैक्षिक प्रक्रिया का एक अंग शिक्षण है। शिक्षण प्रदान करने वाला अभिकरण शिक्षक होता है, और शिक्षा प्राप्त करने वाला शिक्षार्थी शिक्षण की प्रक्रिया के द्वारा व्यक्ति को नवीन ज्ञान तथा कौशल का अधिगम करने में सहायता दी जाती है। शिक्षक, शिक्षार्थी में सीखने की रूचि उत्पन्न करके उसे नवीन ज्ञान तथा कौशल के ग्रहण के लिए तैयार कर सकता है। सीखना शिक्षार्थी को ही है, शिक्षक तो शिक्षण – प्रक्रिया का सहायक मात्र है।

शिक्षण को प्रक्रिया का संचालन मानव व्यवहार और उसकी संवेदनाओं से होता है। शिक्षण के क्षेत्र में शिक्षा की प्रक्रिया की प्रभावशाली बनाने के उद्देश्य से शिक्षण को उद्देश्य केन्द्रित बनाया जाने लगा है। मनोविज्ञान के क्षेत्र में शिक्षा की प्रक्रिया पूर्णतः मनोवैज्ञानिक मानी गई है और इसकें अंगो में शिक्षक, शिक्षार्थी तथा पाठ्यक्रम को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है, परन्तु फिर भी शिक्षक के अधिगम का प्रभाव शिक्षार्थी पर प्रत्यक्ष रूप से पड़ता है।

5 परिसीमन

सतना जिला की राजस्व सीमा के माध्यमिक शिक्षा स्तर के 40 शासकीय विद्यालयों को इस अध्ययन में सम्मिलित किया गया है। जिले की राजस्व सीमा ही शोध क्षेत्र का भौगोलिक परिसीमन है। शोध क्षेत्र के न्यादर्श में चयनित कुल 120 शिक्षकों का चयन देव निदर्शन से किया गया है।

6 अध्ययन पद्धति

शोध में सर्वेक्षण विधि एवं अवलोकन विधि का प्रयोग किया गया है।

7 शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु माध्यमिक शिक्षा स्तर पर कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण अधिगम क्षमता संबंधी जानकारी संकलित करने कें लिए शिक्षक प्रश्नावली पत्रक का प्रयोग किया गया है।

सारणी 1: सतना जिले कें माध्यमिक शिक्षा स्तर पर कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण अधिगम क्षमता शासकीय मापदंड के अनुरूप है, का अध्ययन (शिक्षक प्रश्नावली पत्रक के आधार पर)

क्र.	विकासखण्डों का नाम	न्यादर्श में चयनित विद्यालयों की संख्या	न्यादर्श में चयनित शिक्षकों की संख्या	सतना जिले कें माध्यमिक शिक्षा स्तर पर कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण अधिगम क्षमता					
				शासकीय मापदण्ड के अनुरूप है		शासकीय मापदण्ड कें अनुरूप नही है		नहीं पता	
				संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1	सुहावल (सतना)	05	15	09	60.00	04	26.66	02	13.33
2	चित्रकूट (मझगवॉ)	05	15	08	53.33	05	33.33	02	13.33
3	रामपुर बाघेलान	05	15	11	73.33	03	20.00	01	6.66
4	नागौद	05	15	10	66.66	04	26.66	01	6.66
5	उचेहरा	05	15	09	60.00	04	26.66	02	13.33
6	अमरपाटन	05	15	11	73.00	02	13.33	02	13.33
7	रामनगर	05	15	11	73.33	03	20.00	01	6.66
8	मैहर	05	15	10	66.66	03	20.00	02	13.33
	योग	40	120	79	65.83	28	23.33	13	10.83

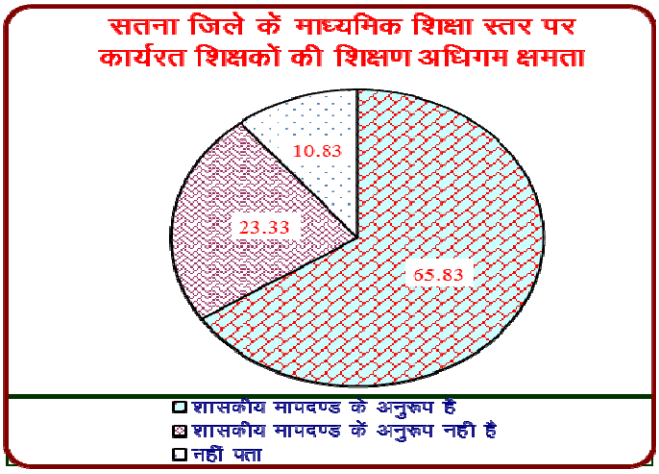

उपरोक्त तालिका के ऑकड़े यह दर्शाते हैं, कि शोध क्षेत्र के न्यादर्श में चयनित कुल 120 शिक्षकों में से 79 शिक्षक यह मानतें हैं, कि सतना जिले के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण अधिगम क्षमता शासकीय मापदण्ड के अनुरूप है। 28

शिक्षकों का यह मानना है, कि सतना जिले के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण अधिगम क्षमता शासकीय मापदण्ड के अनुरूप नहीं है, तथा 3 शिक्षकों को सत ना जिले में माध्यमिक शिक्षा स्तर पर कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण अधिगम क्षमता के संबंध में कुछ पता नहीं है। इस प्रकार शोध क्षेत्र के 65.83 प्रतिशत शिक्षकों के अनुसार सतना जिले के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण अधिगम क्षमता शासकीय मापदण्ड कें अनुरूप है। 23.33 प्रतिशत शिक्षकों कें अनुसार सतना जिले कें माध्यमिक शिक्षा स्तर पर कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण अधिगम क्षमता शासकीय मापदण्ड कें अनुरूप को सतना जिले कें माध्यमिक शिक्षा स्तर पर कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण अधिगमन क्षमता के संबंध में कुछ नहीं पता हैं। इस प्रकार यह सिद्ध होता है, कि सतना जिले के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण अधिगम क्षमता शासकीय मापदण्ड कें अनुरूप है।

8 सुझाव

- माध्यमिक शिक्षा स्तर की शिक्षा को और अधिक आकर्षक बनाया जाय, ताकि अच्छे और प्रतिभावान लोग इस ओर आकर्षित हो सके।
- माध्यमिक शिक्षा स्तर पर कार्यरत शिक्षकों हेतु सेवाकालीन प्रशिक्षणों के पाठ्यक्रम, पाठ्य पुस्तकें एवं परीक्षा प्रणाली में सुधार किया जाए।

9 संन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. पचौरी, गिरीश – शिक्षण अधिगम एवं विकास के मनोवैज्ञानिक आधार, लायल बुक डिपो, मेरठ। 2002
2. पण्डेय, रामशकल – शिक्षा मनोवैज्ञानिक, सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ। 2003
3. कपिल एच.के. – अनुसंधान विधियॉ, एच.पी. भार्गव बुक हाउस, आगरा। 1986–87